# शिक्षक के पेशेवर विकास में सहायक है कक्षागत प्रक्रियाओं का दस्तावेज़ीकरण

कमलेश चंद्र जोशी

शिक्षक का पेशेवर विकास, शिक्षकों की तैयारी का एक अहम हिस्सा है। शिक्षकों की तैयारी कैसी हो, शिक्षकों के साथ कैसे और किन मुद्दों पर काम किया जाए, यह विचार करना महत्त्वपूर्ण है। लेखक बताते हैं कि शिक्षकों द्वारा अपने कक्षा अनुभवों को लिखना, और इस लिखने के ज़रिए अपनी कक्षा प्रक्रिया के बारे में, बच्चों के बारे में विश्लेषणात्मक रूप से सोच पाना उनकी शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर करता है। वे शिक्षकों के एक छोटे समूह के साथ किए गए ऐसे ही एक प्रयास का विवरण इस लेख में प्रस्तुत करते हैं। -सं.

शिक्षक प्रशिक्षणों में किसी विषय पर चर्चा का सन्दर्भ बनाने के लिए अकसर शिक्षकों से कक्षा शिक्षण के अनुभवों को साझा करने को कहा जाता है। इस सवाल के रखते ही प्रशिक्षण कक्ष में सन्नाटा छा जाता है। बड़ी मुश्किलों से दो-चार प्रतिभागी कुछ-कुछ बातें बताते हैं, फिर यह स्वर उभरता है कि हम भी ऐसा ही करते हैं। शायद शिक्षकों के मन में कुछ हिचकिचाहट होती है अपनी बात रखने की या उन्हें लगता है कि कक्षा शिक्षण में जो वे कर रहे हैं, वह उपयुक्त नहीं है। एक अन्य कारण यह भी हो सकता है कि हमारी शिक्षण प्रक्रियाएँ अभी इतने परम्परागत ढंग से चल रही हैं कि इनमें बताने के लिए कुछ नहीं होता। बहरहाल, प्रशिक्षण में कक्षा अनुभव आने मुश्किल हो जाते हैं जिससे सत्र में आगे सन्दर्भ के साथ शिक्षकों के बीच चर्चा करना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा, कक्षागत प्रक्रियाओं की रिपोर्टें, डायरी, आदि कुछ शिक्षकों के पास ही मिल पाती हैं। लेकिन उससे भी कोई ख़ास मदद नहीं मिल पाती, क्योंकि इस डायरी में अकसर काम की योजना या फिर काम करने के चरण लिखे होते हैं। इसमें काम करते हुए आई चुनौतियाँ, सवाल, नई सीख, आदि दर्ज नहीं होते। इसका बड़ा कारण यह रहता है कि हमारी कार्य प्रणाली में इस तरह के अनुभव, रिफ़्लेक्शन दर्ज करने की कोई प्रणाली नहीं रही है और न ही शिक्षण कार्य को इतनी गम्भीरता से लिया जाता है।

## शिक्षकों के समूह के साथ जुड़ाव

विगत डेढ़ वर्षों में चौबीस शिक्षकों के एक समूह में शिक्षक के पेशेवर विकास को ध्यान में रखकर ऑनलाइन व ऑफ़लाइन माध्यम से कार्य किया गया। इस कार्य में शिक्षकों को विविध तरह की सामग्री उपलब्ध करवाना, साप्ताहिक चर्चाएँ, स्कूल विज़िट, ऑफ़लाइन कार्यशालाएँ आदि प्रक्रियाएँ शामिल थीं। इसके केन्द्र में थे– शिक्षकों में शिक्षा व विषय के नज़रिए का विकास, अपने कक्षा शिक्षण को बेहतर बनाने का प्रयास, आदि।

## संवाद की प्रक्रिया

कोविड के उपरान्त जब विद्यालय नियमित चलने लगे, तो शिक्षकों के बीच यह विचार बना कि अपनी कक्षाओं में शिक्षण योजना के साथ कार्य करें और उन अनुभवों को दर्ज करते

हुए रिपोर्ट बनाएँ, जिनपर समूह की साप्ताहिक बैठकों में चर्चा हो सके और हम अपने शिक्षण अभ्यास को और बेहतर बनाने का प्रयास कर सकें। अनुभव दर्ज करते हुए ऐसे कुछ बिन्दुओं का ध्यान रखें। मसलन, हम कक्षा में बच्चों का सक्रिय जुड़ाव बना पा रहे हैं या नहीं; बच्चों के साथ सार्थक चर्चा हो पा रही है या नहीं; गतिविधि आदि करवा पाते हैं कि नहीं; अपने शिक्षण कार्य की बेहतर योजना बना पाते हैं या नहीं; अपने शिक्षण अनुभवों को रिफ़्लेक्टिव ढंग से लिख पाते हैं कि नहीं; आदि। इस उपक्रम में योजना बनाने, उसके क्रियान्वयन और दस्तावेज़ीकरण की प्रक्रियाएँ शामिल थीं।



इस कार्य के लिए प्रारम्भिक भाषा व साक्षरता के मुद्दे को देखते हुए प्राथमिक स्तर के बच्चों के साथ किए जाने वाले काम की शिक्षण योजना बनाई गई। इस योजना में शिक्षक साथियों को यह आज़ादी थी कि वे अपनी कक्षा के बच्चों के सन्दर्भ को देखते हुए इसमें आवश्यक फेरबदल कर सकते थे। जो भी काम किया, उसके आधार पर रिपोर्ट साझा करनी होती थी और इसपर ऑनलाइन माध्यम से साप्ताहिक चर्चा की जाती। कुछ शिक्षकों ने अपने अनुभव, रिपोर्ट लिखी, कुछ ने वीडियो क्लिप भेजीं और कुछ ने बच्चों के बनाए हुए चित्र, कहानियाँ व कविताएँ। इन दर्ज अवलोकनों से शिक्षकों के साथ उनके अनुभवों के आधार पर संवाद सम्भव हुआ जो बच्चों के साथ स्थानीय सन्दर्भ में काम करते हुए उपजा था। वे अपने साथियों के काम के अनुभवों से भी बहुत कुछ सीख रहे थे।

## कक्षा में स्कैफ़ोल्डिंग कैसे हो ?

शुरुआत में शिक्षकों की रिपोर्टों में यह देखने को मिला कि वे कक्षा में शिक्षण योजना के साथ काम तो कर रहे थे, परन्तु योजना यांत्रिक ढंग से ही क्रियान्वित हो पा रही थी। यह समझ में आ रहा था कि साझा की गई सन्दर्भ सामग्री के मूल भाव को सही से नहीं समझा गया था। अधिकतर बातचीत प्रश्नोत्तर के ढर्रे पर ही हो रही थी, जबकि योजना में यह रेखांकित किया गया था कि दिए गए प्रश्न केवल मार्गदर्शन के लिए हैं। चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए बच्चों के उत्तरों पर ध्यान देने की ज़रूरत है। उनके आधार पर और नए प्रश्न पूछे जा सकते हैं और चर्चा को आगे बढ़ाया जा सकता है। यह बात भी उभर रही थी कि बच्चों के उत्तरों को कैसे आगे बढ़ाया जाए, इसकी समझ शिक्षकों में विकसित करने की ज़रूरत थी। यह मुद्दा स्कैफ़ोल्डिंग का था जिसे सीखे जाने की ज़रूरत महसूस होती है। उदाहरण के लिए, एक शिक्षक ने अपनी कक्षा में 'मेला' कविता पर काम करते हुए जो रिपोर्ट साझा की, उसका एक अंश यहाँ देखा जा सकता है :

"मेरे पास शिक्षण योजना के अनुसार कक्षा तीन के बच्चों के लिए चार्ट पर लिखी 'मेला' कविता थी। इसलिए कविता का सन्दर्भ जोड़ते हुए बच्चों से देखे हुए मेले के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने स्थानीय 'झाड़ी के मन्दिर' के मेले के बारे में बताया। अपने अनुभव में बच्चों ने अपने माता-पिता, भाई-बहन, आदि के साथ मेला जाना बताया। कुछ बच्चों ने साइकिल से, कुछ ने मोटरसाइकिल से, तो किसी ने ट्रैक्टर

से मेला जाना बताया। मेले में उन्हें क्या अच्छा लगा, यह पूछने पर झूला, गुब्बारे, चाट, पकौड़ी आदि चीज़ें बच्चों ने बताईं। इसमें अमन का अवलोकन अच्छा लगा। उसने बताया कि मेले में हमारा नए लोगों से परिचय हुआ। उसने बताया कि मेले में बाहर से कुछ लोग आए थे। वे दूसरी बोली बोल रहे थे और उनका पहनावा भी अलग था। वे बन्दरों को केला खिला रहे थे।

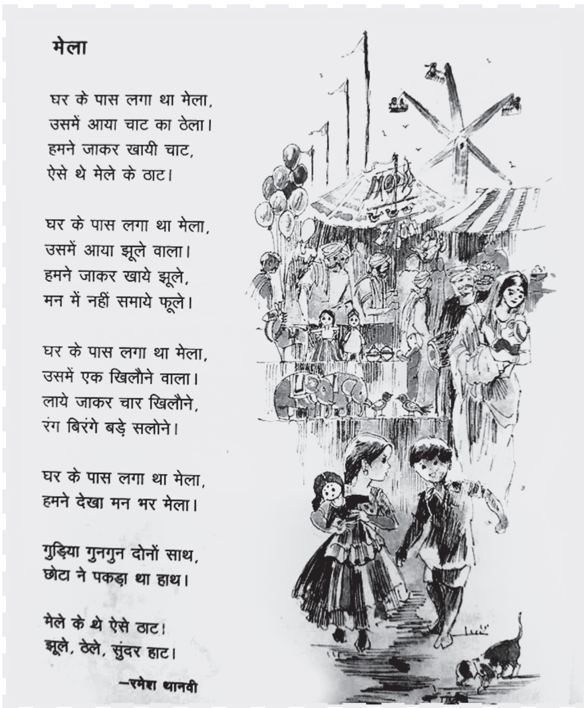
कविता में आए शब्द पहचान के लिए बोर्ड पर लिखे गए। मेले में और क्या-क्या देखा? इसपर बच्चों ने खिलौनेवाला, जलेबी, जादू, गुड़िया, बढ़ई, कैलेंडरवाला, आदि के बारे में बताया। इसमें राजा ने बताया कि मेले में किताबें भी बिक रही थीं। 'मेले में आप लोगों ने क्या-क्या ख़रीदा?' इसपर बच्चों ने गुब्बारे, बाँसुरी, आइसक्रीम, चाउमिन, खिलौने, गेंद, बल्ला आदि ख़रीदना बताया।

'मेला लगना क्यों ज़रूरी है?', इसपर हुई बातचीत में राजा ने बताया कि ये हमारी परम्परा है। समर बोला, 'हमें आनन्द आता है।' शशि बोली, 'हम लोगों को काम करते देखते हैं तो उससे हम भी सीखते हैं।'

'मेले में आप लोगों को कौन-कौन-से काम करते देखते हैं?', पूछने पर बच्चों ने झूला चलाना, गुब्बारे फुलाना, जलेबी बनाना, नाटक करना, आदि के बारे में बताया।

इसके बाद मेले की तरह कुछ अन्य शब्द लिखने का बोलने पर बच्चों ने ठेला, केला, रेला, चेला, ढेला, खेला आदि शब्द बताए। इसी तरह चाट की तरह खाट, बाट, लाट, पाट जैसे कुछ शब्द बताए और अपनी-अपनी कॉपियों पर लिखे।

'मेले में क्या सस्ता और क्या महँगा था?' इसपर बच्चों ने बताया कि छोटे खिलौने 5 रुपए के थे और बड़े 20 रुपए के।



**मेला**

घर के पास लगा था मेला,
उसमें आया चाट का ठेला।
हमने जाकर खायी चाट,
ऐसे थे मेले के ठाट।

घर के पास लगा था मेला,
उसमें आया झूले वाला।
हमने जाकर खाये झूले,
मन में नहीं समाये फूले।

घर के पास लगा था मेला,
उसमें एक खिलौने वाला।
लाये जाकर चार खिलौने,
रंग बिरंगे बड़े सलोने।

घर के पास लगा था मेला,
हमने देखा मन भर मेला।

गुड़िया गुनगुन दोनों साथ,
छोटा ने पकड़ा था हाथ।

मेले के थे ऐसे ठाट।
झूले, ठेले, सुंदर हाट।

—रमेश थानवी

गणितीय जानकारी के लिए बच्चों से पूछा गया, 'मेले में कितनी दुकानें होंगी?' बच्चों ने बताया कि गिना नहीं था। अन्दाज़े से किसी ने 100 बताया, किसी ने 200 तो किसी ने 50 कहा।

'इस कविता का अन्य नाम क्या हो सकता है?' इसपर कुछ बच्चे चुप थे। शायद यह सोच पाना उनके लिए चुनौती था। फिर भी एक बच्चे ने 'झाड़ी के मन्दिर का मेला' कहा। 'इस कविता को पढ़ व सुनकर क्या समझ आया?' इसपर आठ बच्चों ने स्वतंत्र विचार लिखे। अन्य ने बोर्ड से शब्दों को पहचान कर लिखा। इसमें मुझे सबसे अच्छी बात यह लगी कि बच्चे अपनी लिखित अभिव्यक्ति भी दे रहे थे।"

शिक्षकों से इस रिपोर्ट पर हुई चर्चा में यह बात उभारी गई कि इससे कक्षा में हुए काम का पता चलता है। जैसे, कक्षा में सभी बच्चे जुड़े हुए थे और अपने अनुभव रख रहे थे; इसमें अमन जैसे कुछ बच्चों के अवलोकनों को भी

दर्ज किया गया है और भाषा के सभी कौशलों पर कार्य किया गया है; इसमें गणित को भी जोड़ने का प्रयास किया गया है जो अच्छा है; आदि। इसमें चर्चा के दौरान बच्चों से एक प्रश्न और पूछा जा सकता था कि तुम मेले से जुड़ा अपना कोई अनुभव बताओ। और यह बात भी हो सकती थी कि मेले पर कोई और कविता या कहानी पढ़ी हो तो उसके बारे में बताओ। मसलन, एक शिक्षिका की कक्षा में बच्चे इस कविता पर बात करते हुए पुस्तकालय से मेले से जुड़ी एक किताब निकालकर ले आए थे। इससे बच्चों को अपने अनुभव जोड़ने का और मौक़ा मिलता व पढ़ी हुई कविता की समझ और समृद्ध होती।

## पाठ्य सामग्री के नज़रिए को समझना

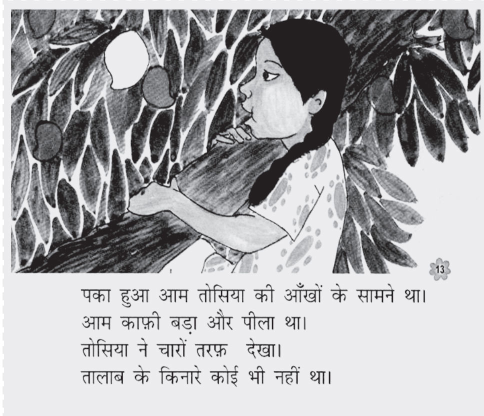
समूह की एक शिक्षिका ने लेव तोलस्तोय की एक बाल कहानी 'गुठली' पर चौथी-पाँचवीं कक्षा के बच्चों के साथ शिक्षण कार्य किया। यह कहानी तोलस्तोय द्वारा लिखित रूसी कहानी का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति को दर्शाया गया है जिसमें महेश नामक बच्चे द्वारा घर में रखे हुए आलूबुख़ारों में से चुपके से आलूबुख़ारे खाने की घटना को आधार बनाया गया है। कहानी का यह अनुभव बालमन की सहज प्रवृत्ति को दर्शाता है। कुल मिलाकर, कहानी बच्चों के जीवन का स्पन्दन है और साहित्यिकता लिए हुए है।

इस कहानी पर काम करते हुए एक शिक्षिका ने अपनी रिपोर्ट लिखकर समूह में साझा की। उस रिपोर्ट का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है। इससे पता चलता है कि शिक्षिका ने इस कहानी को किस नज़रिए से देखा :

"...कहानी पूरी होते-होते कक्षा का वातावरण बहुत सहज हो चुका था जोकि एक अच्छी कक्षा की निशानी होती है। बच्चे बड़े सहज भाव से अपने क़िस्से सुना रहे थे और अपनी की हुई, देखी हुई, चोरी की घटनाओं के बारे में बता रहे थे। हैदर ने बताया, 'एक दिन मेरे भैया और मैंने गुड़ चुराकर खाया था लेकिन अम्मी को पता ही नहीं चला।' निदा ने बताया, 'एक दिन मैंने अपने भैया के बैग से इमली चुराकर खाई थी।' सागर ने बताया, 'मैंने और मेरे दोस्त ने एक दिन बाज़ार में ठेले से लीची चुराकर खाई थी।' शान ने बताया, 'एक दिन अब्बा आम लाए थे तो मैंने चोरी करके अपने हिस्से के आम खाए थे।' यहाँ पर मैंने बच्चों को बताया कि चोरी करना ग़लत बात होती है। किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो उसे पूछकर भी लिया जा सकता है।"






इसपर समूह में यह चर्चा की गई कि शिक्षिका ने बच्चों के अनुभवों पर अच्छी चर्चा की लेकिन इसमें ऐसा भी लगा कि कहानी का उद्देश्य सिर्फ़ यह है कि चोरी करना अच्छी बात नहीं है। जबकि यह कहानी बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति को दिखा रही है और बच्चों को अपने अनुभवों पर सहज ढंग से विचार करने का मौक़ा दे रही है। हमने *बरखा* सीरीज़ की *पका आम* कहानी या नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित और वल्लीकानन द्वारा लिखित *बस की सैर* या प्रेमचंद की कहानी 'नादान दोस्त' को पढ़ा होगा। इनमें बच्चे कुछ काम बिना बताए अपने मन से करते हैं। हमें इस कहानी को इसी दृष्टि से देखने की ज़रूरत है।

## अपने शिक्षण पर समीक्षात्मक चिन्तन

सोहनलाल द्विवेदी की कविता 'जी होता चिड़िया बन जाऊँ' पर चौथी-पाँचवीं कक्षा के बच्चों के साथ कुछ शिक्षकों ने काम किया। इस कविता में स्वतंत्रता के महत्त्व को दर्शाया गया है। यहाँ इस कविता पर हुई बातचीत पर दो शिक्षकों की रिपोर्टों के अंश दिए जा रहे हैं। इनको देखकर पता चलता है कि दो शिक्षक एक ही कविता पर अपनी कक्षा में अलग-अलग ढंग से बात कर रहे हैं और उनकी शिक्षण प्रक्रिया समझ में आ रही है :

"कविता को बोर्ड पर लिखा यह पूरे सप्ताह लिखा रहेगा। बच्चों द्वारा क़रीब चार-पाँच बार दोहराया गया। हर लाइन पर बच्चों की समझ बनी और बच्चों ने भी दोहराया।

मैंने अनुभव किया कि इस कविता के विषय में बच्चों को अच्छा-ख़ासा पूर्वज्ञान है।

'आपके आसपास कौन-कौन-से पक्षी रहते हैं?'

बच्चों ने छह पक्षियों के नाम बताए– 'कौआ, तोता, मैना, कबूतर, चील, तीतर।'

'इनका रंग कैसा होता है?'

बच्चे बता पाए।

'इनकी चोंच कैसी होती है?'

बच्चों ने बताया कि तोते की लाल होती है, चील की चोंच बहुत तीखी, कबूतर की छोटी और कौवे की काली लेकिन बहुत तेज़ होती है।

'ये क्या खाते हैं?'

बच्चे : 'कबूतर गेहूँ खाता है, कौआ रोटी और चावल भी खाता है। चील चूहे खाती है और तोता मिर्ची खाता है।'

'ये रहते कहाँ हैं?'

बच्चे : 'कबूतर घर पर गन्ने की पत्ती से घोंसला बनाता है और चिड़िया तिनकों से पेड़ पर घोंसला बनाती है।'

'चिड़ियों को देखकर आपको कैसा महसूस होता है?'

बच्चे : 'जी, बहुत अच्छा!'

'अगर तुम चिड़िया होते तो कहाँ-कहाँ की सैर करते?'

बच्चे : 'पहाड़ों, मैदानों, घाटी, किसी के भी घर, गाड़ी पर बैठते, खेतों और नदियों की सैर करते।'

एक बच्चे (अंश) ने कहा : 'मैं तो पूरे देश की सैर करता।'

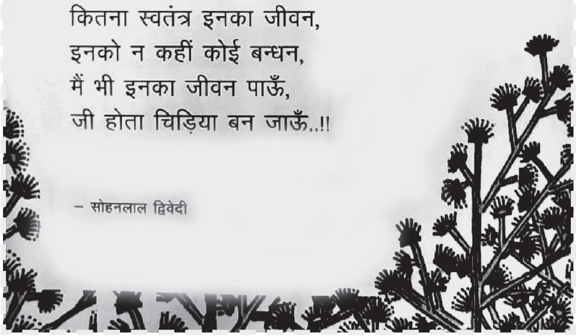
'कुछ लोग चिड़िया को पिंजरे में क़ैद रखते हैं, तुम इसके बारे में क्या सोचते हो?'

## *जी होता चिड़िया बन जाऊँ*

जी होता चिड़िया बन जाऊँ,
मैं नभ में उड़कर सुख पाऊँ,
मैं फुदक-फुदककर डाली पर,
डोलूँ तरु की हरियाली पर,
फिर कुतर-कुतरकर फल खाऊँ,
जी होता चिड़िया बन जाऊँ,
कितना अच्छा इनका जीवन,
आज़ाद सदा इनका तन-मन,
मैं भी इन-सा गाना गाऊँ,
जी होता चिड़िया बन जाऊँ,
जंगल-जंगल में उड़ विचरूँ,
पर्वत घाटी की सैर करूँ,
सब जग को देखूँ इठलाऊँ,
जी होता चिड़िया बन जाऊँ,
कितना स्वतंत्र इनका जीवन,
इनको न कहीं कोई बन्धन,
मैं भी इनका जीवन पाऊँ,
जी होता चिड़िया बन जाऊँ..!!



– सोहनलाल द्विवेदी



ख़ुशी : 'बहुत सारे लोग चिड़िया को पिंजरे में रखते हैं। हमको ये देखकर बहुत बुरा लगता है। चिड़ियों को आज़ादी चाहिए, वो आसमान में रहती हैं तो एक पिंजरे में क़ैद कैसे रह पाएँगी!'

इस बारे में सभी बच्चों की एक राय थी कि हमको बुरा लगता है, और वो आज़ाद रहनी चाहिए।

'आज़ादी का क्या मतलब है?'

बच्चे : 'हम कहीं भी जा सकते हों, घूम सकते हों, कोई रोकने वाला न हो।'

बच्चों से चिड़िया पर कविता भी लिखवाई जो बच्चे लिखकर लाए।"

समूह के दूसरे शिक्षक की इसी कविता पर लिखी रिपोर्ट का एक और अंश यहाँ देखा जा सकता है :

"इशिका बहुत उत्साहित है। वह चाह रही है कि कल वाली बहस (क्या चिड़ियों को पिंजरे में बन्द करना सही है?) आगे बढ़े। उसका कोई परिणाम निकले, और अन्तिम निर्णय मैं (शिक्षक) करूँ। सायना भी कह रही है कि कल बहुत मज़ा आया। अन्य बच्चे भी ख़ुश हैं। इससे पता चलता है कि जब बच्चे विषयवस्तु से अच्छी तरह जुड़ जाते हैं तो उन्हें पढ़ाई में मज़ा आने लगता है। कल वाली बहस आगे बढ़ाने से पहले मुझे यह ज़रूरी लगा कि मैं इस प्रश्न पर बात करूँ कि क्या हम लोग स्वतंत्र हैं? अगर 'हाँ' तो क्यों और अगर 'नहीं' तो क्यों नहीं? इसपर अच्छी बातचीत हुई। चर्चा में लड़कियाँ ही ज़्यादा बोलीं और लड़के कम। इशिका ने कहा, 'लड़कों को आज़ादी है, लड़कियों को कम आज़ादी है।' अनुज ने कहा, 'हमें आधी आज़ादी है, पूरी नहीं।' पूरी आज़ादी क्यों नहीं है, इसपर उसने कुछ तर्क भी दिए। सायना ने कहा, 'हमें नहीं लगता कि हमें आज़ादी है। केवल स्कूल




पैसा कमाने वाली बात पर और चर्चा की जानी चाहिए। हुमुल का इशारा था कि पुरुषों को ज़्यादा आज़ादी इसलिए है क्योंकि वे पैसा कमाते हैं। अनुज की भी बात पर चर्चा करना ज़रूरी है कि आधी आज़ादी क्या है और पूरी आज़ादी क्या? मुझे यह भी लग रहा है कि बच्चे अभी लिखने का काम कम कर पा रहे हैं। कुछ बच्चे ही हैं जो थोड़ा-बहुत लिखने की कोशिश करते हैं। कुल मिलाकर, आज का काम बढ़िया रहा।"

इन रिपोर्टों पर शिक्षक साथियों के साथ समूह चर्चा में यह बातें उभरकर आईं कि बच्चों ने अपने आसपास के अवलोकन अच्छे-से बताए हैं। इससे पता चलता है कि बच्चे अपने आसपास के परिवेश को अच्छे-से समझते हैं। आज़ादी की बात भी उभरी है, पर इस चर्चा को बहुत आगे नहीं बढ़ाया गया। यह कमी लगती है। इसपर आगे ध्यान दिया जा सकता है।

दूसरी रिपोर्ट के अंश से पता चल रहा है कि कविता पर चर्चा में बच्चे गहराई से जुड़े हैं और अपने तर्क भी रख रहे हैं। इससे पता चल रहा है कि बच्चे अपने आसपास के परिवेश के प्रति सजग हैं। यहाँ पर थोड़ा लग रहा है कि अनुज ने आधी आज़ादी पर क्या तर्क दिया, यह उभरकर नहीं आया। साथ ही शिक्षक ने अपना क्या वक्तव्य दिया, वह भी इसमें नहीं आया। अगर इसे भी लिख देंगे तब बात मुक़म्मल तरीक़े से आ जाएगी। इस रिपोर्ट की ख़ास बात यह भी है कि शिक्षक को अन्त में महसूस हुआ कि मुद्दों पर और चर्चा का मौक़ा दिया जाना चाहिए जो नहीं हो पाया। यह बात भी एक चिन्तनशील शिक्षक के

आने की आज़ादी है, फिर घर में घुस जाओ, झाड़ू लगाओ, बर्तन माँजो, खाना बनाओ। हमें उतनी आज़ादी नहीं है, जितनी लड़कों को है।' मुझे चर्चा आगे बढ़ाने का बढ़िया मौक़ा मिल गया। लड़कियाँ ख़ूब बोलीं कि कैसे उन्हें हर बात के लिए रोक दिया जाता है और उन्हें घर का काम ज़्यादा करना होता है। वे महसूस कर रही हैं कि उन्हें कम आज़ादी है और उन्हें ज़्यादा आज़ादी मिलनी चाहिए। आज़ाद रहना अच्छा लगता है। कोई मन का नहीं करने देता है तो बहुत बुरा लगता है। इशिका और सायना जैसी लड़कियाँ चाह रही थीं कि इसपर कल जैसी बहस हो। अब कल वाली बहस का निर्णय करना था। निर्णय तो लगभग हो ही चुका था कि आज़ादी सबको अच्छी लगती है। फिर भी मैंने चार-पाँच मिनट का एक वक्तव्य दिया। अब सभी बच्चे इस बात से सहमत दिखे कि चिड़ियों को पिंजरे में बन्द करना ठीक नहीं है। मुझे ऐसा लगा कि आज़ादी वाली और

लिए ज़रूरी है जो चर्चा में उभरकर आई। इस प्रकार हम देखते हैं कि अपने दूसरे साथियों के अनुभवों को पढ़कर हम अपने शिक्षण को और बेहतर बना सकते हैं।

## निष्कर्ष

शिक्षकों के शिक्षण कार्य व इन रिपोर्टों से यह भी पता चलता है कि कक्षा की प्रक्रियाओं में बच्चों की प्रतिभागिता कैसी रही, बच्चों को सोचने के मौक़े दिए गए या नहीं, और कक्षा शिक्षण समझ पर आधारित है या केवल बता देने वाला है। सबसे अच्छा यह रहा कि इन मुद्दों पर शिक्षकों के साथ बातचीत का मौक़ा मिला और उन्हें अपने शिक्षण को समीक्षात्मक ढंग से देखने की दृष्टि मिली। इसके अलावा, किसी पाठ्य सामग्री पर अच्छी शिक्षण योजनाएँ कैसे बनें, उनमें किस तरह के सवाल व गतिविधियाँ हों, इसपर भी समझ बनी। इस तरह की समझ व शिक्षण दृष्टि हर शिक्षक के लिए ज़रूरी है और यह शिक्षक के पेशेवर विकास के लिए सबसे अधिक आवश्यक है।

इस आलेख में नरेश चन्द्र, मीनाक्षी आर्या, किरनपाल और धर्मपाल गंगवार की कक्षा शिक्षण की रिपोर्टों के कुछ अंशों का इस्तेमाल किया गया है। उनके प्रति आभार।

कमलेश चंद्र जोशी प्राथमिक शिक्षा से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों– शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता आदि में गहरी रुचि। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर में कार्यरत।

सम्पर्क : kamlesh@azimpremjifoundation.org